पाठ - 12

लोगों का आना और बादशाहों के नाम चिठ्ठी

الدرس الثاني عشر - هندي

الوفود و مكاتبة الملوك

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन इस्लाम ग़लबा पा गया और आपकी दावत फैल गयी, अतएव हर तरफ से वफ़ूद का आना और उनका इस्लाम में दाखिले के एलान का सिलसिला शुरु हो गया।

इसी तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की तरफ दावत देने के मक़सद से बादशाहों, क़बीलों के अमीरों और हाकिमों के नाम खुतूत भेजे। कुछ लोगों ने आपकी दावत स्वीकार की और आप पर ईमान लाए और कुछ ने बेहतर अन्दाज़ से जवाब दिया और आपकी सेवा में उपहार भेजे। अलबत्ता वे इस्लाम में दाखिल नहीं हुए और कुछ ऐसे भी थे जो गुस्सा हो गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्र को फाड़ दिया, जैसा कि शाहे फ़ारस ने किया। उसने आपके खत को फाड़ दिया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए बद दुआ की और कहाः ''अल्लाह उसकी हुकूमत को टुकड़े टुकड़े कर दे। अतएव कुछ ही दिनों बाद उसके बेटे ने उसके खिलाफ़ बग़ावत करके उससे बादशाहत छीन ली।

शाहे मिस्र मक़ोक़स ने इस्लाम तो स्वीकार नहीं किया, अलबत्ता उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिद का सम्मान किया और उनके हाथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तोहफ़े भेजे। क़ैसर रूम ने भी इसी तरह से किया। उसने भले तरीक़े से जवाब दिया और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्मान किया और आपके लिए हदया भेजा। बहरैन के शासक मुन्ज़र बिन सावी के पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खत पहुंचा तो उसने अपने पास मौजूद लोगों के सामने उसे पढ़ा, अतएव कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इन्कार किया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज से वापसी के ढाई महीने बाद आप की बीमारी का सिलसिला शुरु हुआ और दिन प्रति दिन रोग में बढ़ौतरी होती चली गयी। जब आप लोगों को नमाज़ पढ़ाने की ताक़त न रख सके तो अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से लोगों की इमामत करने को कहा।

पीर के दिन 12 रबीउल अव्वल सन 11 हिजरी में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रफ़ीक़े आला से जा मिले। आपने 63 साल की उम्र पायी। जब इसकी खबर सहाबा किराम को मिली तो ऐसा लगता था कि वे होश व हवास और अपनी अक़्ल खो बैठेंगे और उन लोगों को आपकी वफ़ात का विश्वास ही नहीं हुआ यहां तक कि अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु ने उनको शान्त करने के उद्देश्य से खुतबा दिया और बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्सान हैं और दूसरे लोगों की तरह उनको भी मौत से दोचार होना पड़ेगा। इसके बाद लोग शान्त हुए। आपकी पत्नी आयशा रजियल्लाहु अन्हाके कमरे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ल और कफन दफ़न का काम अंजाम दिया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का में नुबुवत से पहले चालीस साल और नुबुवत के बाद 13 साल और मदीना मुनव्वरा में नुबुवत के बाद 10 साल क़याम किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मुसलमानों ने आम सहमति से अबू बक्र ;रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफ़ा चुन लिया। अतएव वह पहले खलीफ़ा राशिद थे।